ग्वालियर परम्परा के सुप्रसिद्ध कलाकार पं. रामस्वरूप रतौनिया और उनके वादन मं प्रतिबिम्बित तबले की तकनीक

डॉ. शिवेन्द्र प्रताप त्रिपाठी (सहायक प्राध्यापक)
गायत्री (शोध छात्रा)
संगीत विभाग, दयालबाग़ एजूकेशनल इन्स्टीट्यूट
(डीम्ड यूनिवर्सिटी), दयालबाग, आगरा।

ग्वालियर परम्परा के सुविख्यात तबला वादक पं. रामस्वरूप रतौनिया के नाम से संगीत जगत का प्रत्येक कलाकार परिचित है। पं. जी ने अपना सम्पूर्ण जीवन संगीत की अराधना व उसकी सेवा में ही व्यतीत किया। अपनी इस सांगीतिक यात्रा का आरम्भ उन्होंने छोटी उम्र से ही किया था। पण्डित रामस्वरूप रतौनिया का जन्म मध्यप्रदेश के ग्वालियर जिले के गौसपुरा नामक गाँव में 3 फरवरी 1953 को हुआ था। इनके पिता पं. नारायण प्रसाद रतौनिया ग्वालियर के सुप्रसिद्ध पखावज व तबला वादक पं. नारायण प्रसाद रतौनिया थे तथा इनकी माता का नाम श्रीमती बेटी बाई रतौनिया था, वे एक कुशल गृहिणी थी। पं. रामस्वरूप जी के दादा पं. दानसहाय भी पखावज के प्रकाण्ड विद्वान थे।

पं. रामस्वरूप रतौनिया ने बाल्यकाल से ही तबले की शिक्षा ग्रहण करना आरम्भ किया था। पं0 रामस्वरूप रतौनिया जी के प्रथम गुरु (पिता) प्रख्यात पखावज व तबला वादक पं. नारायण प्रसाद रतौनिया थे। तत्पश्चात् दादा पं. दानसहाय रतौनिया से भी आपने तबले की शिक्षा ग्रहण की। यथावसर नाना धनपाल जी से तबले की बारीकियाँ तथा विभिन्न घरानों की शिक्षा ग्रहण की पं. रामस्वरूप रतौनिया जी ने समय–समय पर आगरा के प्रसिद्ध तबला वादक पं. लल्लू सिंह जी से भी तबले के विभिन्न घरानों की शिक्षा ग्रहण की।

पं. रामस्वरूप जी की प्रारम्भिक शिक्षा ग्वालियर के स्कूल से ही हुई। उन्होंने जीवाजी विश्वविद्यालय से हिन्दी साहित्य में स्नातकोत्तर की उपाधि प्राप्त की तथा इन्दिरा कला संगीत विश्वविद्यालय, खैरागढ़ (छत्तीसगढ़) से स्वर्ण पदक के साथ संगीत तबला में स्नातकोत्तर की उपाधि प्राप्त की। पं. रामस्वरूप रतौनिया देश के विख्यात अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त कलाकार थे। इन्होनें देश–विदेश में जगह–जगह पर तबले की प्रस्तुति दी तथा आकाशवाणी में कार्यरत होने के कारण वे छतरपुर, रीवा, भोपाल, विलासपुर, ग्वालियर आदि स्थानों पर कार्यरत रहे तथा जहाँ–जहाँ रहे वहाँ–वहाँ अपने शिष्य को तैयार करते रहे। इस कारण उनकी शिष्य परम्परा उ. प्र., म. प्र., राजस्थान आदि राज्यों तक फैली हुई है।

उनकी वंश परम्परा में उनके छोटे भाई पं0 भोगीराम रतौनिया (रिटायर्ड डायरेक्टर, आकाशवाणी, जबलपुर), पुत्री–प्रियंका रतौनिया (तबला वादिका एवं न्यायादिश, मध्यप्रदेश), पुत्री–रागेश्री (संगीत गायन, असिस्टेंट प्रोफेसर, भोपाल), पुत्र–विभाश रतौनिया (डॉक्टर), बहन–कमल रतौनिया (गायिका), भतीजे चैतन्य रतौनिया, ललित रतौनियां, भान्जे जितेन्द्र सिनोटिया तथा प्रमोद सिनोटिया साथ ही शिष्य परम्परा में अनेक शिष्य भी हुए। इस प्रकार पं0 रामस्वरूप रतौनिया ने अनेकों शिष्यों को शिक्षा प्रदान की। उनके द्वारा दी गई शिक्षा से उनके शिष्य कहीं न कहीं सांगीतिक योगदान दे रहे हैं तथा विश्वविद्यालय, विद्यालय, सांगीतिक संस्थाओं आदि में कार्यरत हैं। पंण्डित जी के अधिकतर शिष्य आकाशवाणी के कलाकार के रूप में कार्यरत हैं।

पं. रामस्वरूप रतौनिया ने देश के विभिन्न संगीत समारोहों में एकल तबला वादन एवं संगतकार के रूप में कार्यक्रम प्रस्तुत किये हैं। उनके वादन में दिल्ली व पूरब के घरानों की प्रमुख विशेषताएँ स्पष्ट रूप से परिलक्षित होती है – आपको विभिन्न पुरस्कारों एवं सम्मानों से नवाजा गया है जो इस प्रकार है –

- **श्रेष्ठ कला आचार्य सम्मान**– मुख्यमन्त्री म. प्र. श्री शिवराज सिंह के द्वारा सम्मानित
- **ताल शिरोमणि सम्मान**– गाँधी हिन्दुस्तानी साहित्य सभा दिल्ली द्वारा सम्मानित
- **संगीत शिरोमणि सम्मान**– गाँधी हिन्दुस्तानी साहित्य सभा, दिल्ली द्वारा सम्मानित
- **कला साधना सम्मान**– संस्कृति मंत्री श्री लक्ष्मीकांत शर्मा द्वारा सम्मानित
- **स्वं विठ्ठल लाल स्मृति सम्मान दिल्ली – 2006**
- **महामहिम राष्ट्रपति एवं महामहिम राज्यपाल द्वारा सम्मानित**
- **कला निधि सम्मान**– चम्बा हिमाचल प्रदेश
- **तबला चक्रवती सम्मान**– कोटा, राजस्थान
- **कुमार गंधर्व संगीत समारोह में 'कुमार ताल' क सृजन हेतु मुक्तकंठ से प्रशंसा**
- **पंडित विमलेन्दु मुखर्जी सम्मान**– रायपुर
- **ताल सम्मान**– दिल्ली।

इस प्रकार पं. रामस्वरूप रतौनिया का सम्पूर्ण जीवन संगीतमय रहा। पं. रामस्वरूप रतौनिया ने 33 वर्षों तक आकाशवाणी में संगीत की सेवा की, तत्पश्चात् 61 साल की उम्र में उन्हें ह्रदयाघात हुआ तथा 3 दिसम्बर 2016 की सुबह 4 बजे उनका निधन हो गया। इस प्रकार संगीत जगत का एक जगमगाता सितारा संगीत जगत से विलुप्त हो गया।

पं. रामस्वरूप रतौनिया ने 10 साल तक शासकीय माधव संगीत महाविद्यालय, ग्वालियर में सहायक शिक्षक (तबला) के रूप में कार्य किया। पं. जी ने आकाशवाणी द्वारा आयोजित संगीत सभाओं जैसे – भोपाल, ग्वालियर, जम्मू, उदयपुर, पटना, रीवा, सागर, शिवपुरी, बिलासपुर, मथुरा, रायपुर, इन्दौर, दिल्ली, जयपुर, पटना, भागलपुर एवं कुरूक्षेत्र में शिरकत की तथा भारत के राष्ट्रपति महामहिम शंकरदयाल शर्मा के आतिथ्य में आयोजित संगीत सम्मेलन में भी शिरकत की।

पं. रामस्वरूप रतौनिया ने भारतीय विश्वविद्यालय संघ नईदिल्ली (Association of Indian Universities) द्वारा अन्तर विश्वविद्यालयी क्षेत्रीय एवं राष्ट्रीय प्रतियोगिताओं में एक प्रमुख निर्णायक के रूप में सक्रिय भागीदारी की जिनमें से जालंधर, ग्वालियर, मैसूर, नागपुर, तेजपुर (आसाम), आनन्द (गुजरात), लखनऊ तथा अजमेर के केन्द्र मुख्य है।

पं. रामस्वरूप रतौनिया ने तबले की अनेकों बन्दिशों की रचना की। पं. जी की स्वरचित बन्दिशें चमत्कारिक होती थी तथा इन बन्दिशों में लयकारियों की विशेषता होती थी। पं. जी विभिन्न प्रकार की लयों का प्रयोग करते थे तथा खुले व बन्द दोनों प्रकार के बोलों से निर्मित बन्दिशों का वादन करते थे। यूँ तो वे सभी घराने का तबला वादन करते थे परन्तु वे फर्रूक्खाबाद एवं अजराड़ा से ज्यादा प्रभावित थे। पं0 रामस्वरूप रतौनिया ने अनेकों बन्दिशें बजायी तथा बनायी जो उनके कारण रामस्वरूप रतौनिया और भी ज्यादा प्रसिद्धि प्राप्ति की। उनकी बन्दिशों में लयकारी तथा चंचलता अधिक दिखती थी। पं0 रामस्वरूप जी द्वारा बजायी गयी कुछ बन्दिश इस प्रकार है –

प्रस्तुत कायदा लखनऊ घराने से प्रभावित है। यह कायदा पं. रामस्वरूप रतौनिया को अत्यन्त प्रिय था और अपने तबला वादन में प्रायः वे इसे बजाते थे। इस कायदे की विशेषता यह है कि इसके प्रत्येक विभाग के अन्त में तिनकिन, धिनगिन, तूनाकता, धिनाकता, तिनाकिटतक के बोल का प्रयोग नही किया गया बल्कि यहाँ धाधिंनाऽ धातिंनाऽ का प्रयोग किया गया है तथा इस कायदे में अंत में विश्रान्ति का प्रयोग किया गया है। यह कायदा चतुरस्त्र जाति तथा तीनताल में निबद्ध है।

कायदा (तीनताल)

धिटधागे नाधातिरकिट धिटधागे धाऽधिंना ।
तिरकिटतकता तिरकिटधिट धिटधागे धाऽतिंना ।
X 2
तिटताके नाताातिरकिट तिटताके ताऽतिंना ।
तिरकिटतकता तिरकिटधिट धिटधागे धाऽधिंना ।
0 3

प्रस्तुत कायदा दिल्ली घराने के प्रसिद्ध कायदे धातिटधा तिटधाधा तिटधागे, तिनकिन से प्रभावित है। इस कायदे में धाधा, तिट, तिनकिन, धिनगिन बोलो का प्रयोग किया गया है।

कायदा (तीनताल)

धातिटधा धातिटधा तिटधागे धिनेधा ।
तिटधागे धिनगिन धातीधागे तिनकिन ।

X 2

तातिटता तातिटता तिटतागे तिनेता ।
तिटतागे धिनगिन धातीधागे धिनगिन ।
0 3

प्रस्तुत कायदा कायदा अजराड़ा घराने से प्रभावित कायदा है। इस कायदे में धाघेघे, गिनधागे, त्रकधिन, घेघेनग, धिनगिन, धागेत्रक, तिनकिन आदि बोलों का प्रयोग किया गया है। इस कायदे में बायें तबले अथवा डग्गे का घेघे के वादन द्वारा अधिक प्रयोग होता है तथा इस कायदे में दाब–गॉस का प्रयोग भी बहुत ही सुन्दरता से किया गया है।

कायदा (तीनताल)

धोघेघे नगधिन गिनधागे त्रकधिन ।
घेघेनग धिनगिन धागेत्रक धिनगिन ।
X 2
धिनघेघे नगधिन गिनधागे त्रकधिन ।
घेघेनग धिनगिन धागेत्रक तिनकिन ।
0 3
तोकेके नककिन किनताके त्रकतिन ।
केकेनक तिनकिन ताकेत्रक तिनकिन ।
ग 2
धिनघेघे नगधिन गिनधागे त्रकधिन ।
घेघेनग धिनगिन धागेत्रक धिनगिन ।
0 3

प्रस्तुत रेला में लयकारियों का प्रयोग हुआ है। यह रेला पं. रतौनिया जी अधिक बजाते थे। यह उनका पसन्दीदा रेला है। इस रेले का प्रारम्भ कत बोल से हुआ है साथ ही इसमे धिरधिर किटतक, नाना आदि बोलों का प्रयोग हुआ है।

रेला (तीनताल)

कत घेघे नाना कतकत ।
केते केधिर तिरतिर किटतक ।
X 2
कत केके नाना कतकत ।
केते केधिर धिरधिर किटतक ।
0 3

पं. रामस्वरूप रतौनिया तबले के अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त कलाकार थे तथा मध्य प्रदेश राज्य के एकमात्र आकाशवाणी के टॉप ग्रेड़ कलाकार थे। उन्होंने आजीवन संगीत की सेवा की। पं. रामस्वरूप रतौनिया के वादन में लयकारी का प्रभुत्व अधिक होता था। पं. रामस्वरूप रतौनिया के वादन की एक विशेषता यह भी थी कि वह बाँयें पर अधिक वजन देते थे उनके वादन में दाब–गॉस का प्रयोग अधिक दिखता था। बाँयें से ही वह वादन मं चमत्कारिकता उत्पन्न करते थे, वह बाँयें से ही लय बदलते थे और बाँयें से सौन्दर्य को उत्पन्न करते थे।

पं. जी के वादन में बन्द व खुले दोनों प्रकार के बोलों का प्रयोग दिखता था क्योंकि पं. जी ग्वालियर की पखावज परम्परा से थे इसलिए उनके तबला वादन में पखावज के बोल भी सुनाई देते थे। पं. जी की एक खास बात यह भी थी कि वह कहीं से भी किसी भी मात्रा से सम तक आने के लिए तिहाई लगा लेते थे तथा तिहाईयों से और भी अधिक सौन्दर्य उत्पन्न होता था। पं. रामस्वरूप रतौनिया जी संगत के समय गायक वादक के अनुसार तथा समय देखकर बीच–बीच में छोटे–छोटे मुखड़े–मोहरे का प्रयोग करते तथा सौन्दर्य की वृद्धि हेतु उसमें तिहाई आदि का प्रयोग भी करते थे। इससे गायक का गायन प्रभावशाली सुनाई देता था। पं0 जी की संगत बहुत ही मीठी होती थी तथा वे बच्चों के साथ बच्चें की तरह ही संगत किया करते थे। पं0 जी का जैसा व्यवहार था वैसी ही संगत किया करते थे।

पं. रामस्वरूप रतौनिया को सोलो तथा संगत दोनों में ही महारथ प्राप्त थी। वह जितना मीठा एकल वादन करते उससे कई गुना मीठी सहवादन करते थे तथा जितना मीठा सहवादन करते उससे कई गुना मीठा एकल वादन करते अर्थात् उनके सोलो व संगत के परिप्रेक्ष्य में यह कहना असम्भव है कि वह सोलो ज्यादा अच्छा बजाते थे या संगत।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची –

1. पखावज और तबला के घराने एवं परम्पराएँ – डॉ. आबान ई. मिस्त्री
2. तालकोश – श्री गिरिशचन्द्र श्रीवास्तव
3. बीसवीं शताब्दी के शताब्दी के महान संगीतज्ञःपं. दिलीपचन्द्र वेदी – नूपुर रायचौधरी